धानी के तीन दोस्त | कक्षा में कहानी

अनुजा हल्दर

कहानियाँ आमतौर से सभी आयु वर्ग के बच्चों को आकर्षित करती हैं और उनमें रुचि पैदा करती हैं। लेकिन यह तब होता है जब उन्हें इसमें सक्रिय तरीक़े से भाग लेने का अवसर मिलता है और यह समझने का मौक़ा मिलता है कि कहानी में क्या घटित हो रहा है। अध्यापकों के लिए भी, यह एक ऐसे उपकरण का काम कर सकता है जिसके माध्यम से विभिन्न विकासात्मक क्षेत्रों और सीखने के परिणामों तक पहुँचा जा सकता है।

कक्षा-1 और 2 के विद्यार्थियों के साथ कहानी सुनाने के सत्रों के मेरे शुरुआती अनुभव बहुत सफल नहीं रहे थे। बच्चों का ध्यान केन्द्रित करने का समय चूँकि बहुत कम होता है, अतः कहानी शुरू होने के कुछ मिनटों के बाद ही बच्चों की सक्रिय भागीदारी बन्द हो जाती थी। मैंने इस बात को समझा कि कहानी का सार बच्चों को विभिन्न क़िरदारों और उनकी भावनाओं के साथ जोड़े रखना है न कि बच्चों के ज्ञान का मूल्यांकन करने के लिए उनसे सवाल करना। शुरू में मैं कहानी के प्रत्येक पन्ने से बच्चों से कई सवाल पूछती थी। इससे कहानी के साथ उनका नाता बाधित हो जाता था और बच्चों की उसमें रुचि ख़त्म हो जाती थी। जब मैंने अपने हाव-भाव और आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ कहानी सुनाने का प्रयास किया और उनसे बहुत सवाल नहीं पूछे तब मैंने ध्यान दिया कि विद्यार्थी कहानी को ज़्यादा ध्यान से सुनने लगे।

इसी तरह मैंने यह कल्पना नहीं की थी कि मैं कहानी सुनाने के सत्रों में आँगनवाड़ी केन्द्रों के बच्चों (तीन-पाँच साल के) को कहानी के साथ जोड़ने में सफल हो पाऊँगी। लेकिन जब मैंने सर्किल टाइम के दौरान कहानी सुनना शुरू किया तो वे इतने ज़्यादा ध्यान से कहानी सुनने लगे कि एक सत्र के बाद कहानी के क़िरदारों के चित्र भी बनाने लगे। अब वे अपने शब्दों में, मतलब अपने घर की भाषा में या कला के माध्यम से कहानी को बयान कर सकते थे। जब मैं बच्चों के बीच लड़ाई-झगड़े, शोर मचाने या दिए गए कामों को न करने जैसे मुद्दों का सामना करती थी तो कहानी सुनाना एक सामान्य शिक्षणविधि के रूप में मेरी मदद भी करता था। विद्यार्थियों के साथ जब भी मेरी पाठ योजनाएँ असफल हो जातीं तो कहानी सुनाना मेरे लिए काम आ जाता या मेरी रक्षक रणनीति बन जाता। यह गतिविधि आँगनवाड़ी, प्राथमिक और उच्च प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के साथ अच्छी तरह काम आई है।

मैंने वह क्रमिक रूपान्तर देखा कि कैसे किताब पढ़ने में रुचि न लेने वाले विद्यार्थी भागकर पुस्तकालय की ओर जाते और मुझसे कहानी पढ़ने का इसरार करने लगते। मैंने यह सीखा कि कैसे कहानी सुनाने का तरीक़ा भी महत्त्वपूर्ण है। एक कहानी सुनाने वाले को निम्न चीज़ें अवश्य करनी चाहिए —

- आवाज़ और स्वर के उतार-चढ़ाव के कौशल हासिल करना।
- कहानी कहने के ढंग के अनुरूप अपनी भाव-भंगिमाओं को ढालना।
- ऐसी कहानियाँ चुनना जो सुनने वालों की रुचि की हों।
- जो कहानी आप सुनाने जा रहे हैं, उसकी कई बार तैयारी करें और उचित योजना बनाएँ।
- उचित शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) का प्रयोग करें।
- सत्र के पहले अभ्यास करें।

मेरे विचार से कहानी सुनाने की गतिविधि ऐसी होनी चाहिए कि सुनने वालों को अलग और स्वतंत्र तरीक़े से सोचने का अवसर उपलब्ध हो। अलग दृष्टिकोण और राय रखने के अवसर प्रदान करने चाहिए और इनके लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, कहानी का अन्त बच्चों के लिए खुला छोड़ देना चाहिए ताकि वे उसकी व्याख्या कर सकें।

बड़ी किताब (बिग बुक) की कहानी : धानी के तीन दोस्त

मैंने एक आँगनवाड़ी केन्द्र के बच्चों को एक बड़ी किताब, *धानी के तीन दोस्त* से एक हिस्सा पढ़कर सुनाया और उनसे इस बात का अर्थ लगाने के लिए कहा कि कहानी के बीच में कौवे को क्या हुआ होगा (बच्चों को किताब में बने चित्रों को देखकर अपनी कल्पनाओं और तर्कों के आधार पर मुझे बताना था)। बच्चे बहुत उत्सुक थे और उनके पास तमाम सवाल थे, जैसे सभी जानवर कहाँ गए? धानी दुखी क्यों थी?

मैंने उनसे कहा कि सोचो और मुझे बताओ। मैं यह देख सकती थी कि वे ख़ुद सोच रहे थे और घटनाओं के बीच सम्बन्ध

जोड़ पा रहे थे और मैंने कहानी को भाव-भंगिमा के साथ सुनाना जारी रखा। एक विद्यार्थी ने कहा, "कौवे का एक्सीडेंट हुआ और उसका पैर टूट गया, इसलिए कौवा तेज़-तेज़ से रोने लगा।" एक अन्य विद्यार्थी ने कहा, "कौवा भूखा है इसलिए रो रहा है।" फिर एक अन्य बच्चे ने कहा, "गर्मी के कारण कौवा उड़ते-उड़ते नीचे गिर पड़ा।" मैं हैरान थी कि एक ही चित्र को देखकर ये बच्चे नए-नए विचार ला पा रहे थे। एक शिक्षक के रूप में मैंने इसकी सराहना की और सत्र के दौरान निर्देश देने वाले की बजाय एक मददगार के रूप में काम किया।

पूर्व स्कूली शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है कि बच्चे प्रभावी ढंग से संवाद करने वाले बन सकें। कहानी सुनाने के सत्रों के दौरान बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर देकर इसे हासिल किया जा सकता है। आगे बढ़कर इसे शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों के साथ जोड़ा जा सकता है, जैसे कि व्यक्ति को विचारों की स्पष्टता और निर्णय लेने की क्षमता वाला एक तार्किक और स्वतंत्र चिन्तक बनाना, बजाय ऐसा व्यक्ति होने के जो तथ्यों को बिना तर्क के स्वीकार कर लेता हो।

प्रभावी ढंग से कहानी सुनाना

छोटे बच्चों के लिए शिक्षणविधि के रूप में कहानियों और कहानी की किताबों के प्रभावी इस्तेमाल के लिए निम्न बातें ध्यान में रखी जानी चाहिए —

कहानी की किताबों का चयन

- कहानी की किताबों में पाठ्य कम और चित्र ज़्यादा होने चाहिए।
- ये चित्र चमकदार और रंगीन होने चाहिए ताकि बच्चे आकर्षित हों और इनके साथ जुड़ाव महसूस करें।
- कहानी के क़िरदार और सन्दर्भ बच्चों की रुचि के होने चाहिए, जैसे जानवर, प्रकृति आदि।
- कहानी की किताब में चित्र और पाठ्य का सामंजस्य इस तरह होना चाहिए कि छपे हुए शब्दों के प्रति बच्चे जागरूक बन सकें।
- कहानियाँ बहुत लम्बी नहीं होनी चाहिए क्योंकि बच्चों का ध्यान केन्द्रित करने का समय कम होता है।
- कहानियों की भाषा सरल होनी चाहिए। उदाहरण के लिए अगर कहानी का पाठ्य लयात्मक है तो विद्यार्थियों के लिए उसे समझना और कक्षा के दौरान दोहराना आसान होता है। इससे मौखिक भाषा के विकास में और सुनने तथा ध्यान केन्द्रित करने का समय बढ़ाने में सहायता मिलती है।

कहानी के बाद

- कहानी सुनाने के प्रत्येक सत्र के बाद एक निर्देशित बातचीत करें या कहानी से सम्बन्धित खुले सवाल पूछें, ताकि कहानी के बारे में बच्चों की समझ का मूल्यांकन किया जा सके। साथ ही उन्हें मौखिक व लिखित रूप से अथवा चित्र बनाते हुए रचनात्मक अभिव्यक्ति व सोच-विचार के अवसर भी उपलब्ध कराए जा सकें।
- सत्र के दौरान एक साथ कई सवालों से बचना चाहिए क्योंकि इससे सुनने वालों का कहानी के साथ रिश्ता बाधित होता है। सवाल खुले होने चाहिए जिससे विद्यार्थियों को अपने आस-पास के वातावरण से जोड़कर सोचने और जवाब देने का अवसर मिल सके। उदाहरण के लिए इस कहानी को पढ़ने के बाद मैंने निम्न सवाल पूछे : "क्या धानी की तरह आपके भी कोई जानवर दोस्त हैं? अगर हैं, तो कौन-से जानवर? आपका जानवर दोस्त क्या खाना पसन्द करता है?" इन सवालों से बच्चे अपने वास्तविक दुनियावी सन्दर्भ में सीखते हैं, बात करते हैं, समस्या सुलझाते हैं, सवाल पूछते हैं, सूचनाएँ साझा करते हैं, विचारों का आदान-प्रदान करते हैं और सूचनाओं को वर्तमान ज्ञान और कौशल के साथ जोड़ते हैं और प्रतिक्रिया देते हैं।

जिज्ञासा और रुचि को जगाना

- कहानी सुनाने के विभिन्न तरीक़ों को उनके लिए सुलभ बनाना। जैसे पिक्चर कार्ड, बड़ी किताबों, डण्डियों पर लगी कठपुतलियों का इस्तेमाल करना। रचनात्मक आत्म अभिव्यक्ति के मौक़े देना जैसे सवालों के जवाब देना या कहानी के बारे में अनुमान लगाना। सीखने के कई उदेश्यों को पूरा करते हुए कला के माध्यम से अभिव्यक्ति करना या भूमिका निर्वाह करना, जहाँ बच्चा मौखिक रूप से, भाव-भंगिमाओं व दृश्य कलाओं आदि के माध्यम से विभिन्न प्रकार के माध्यमों/ रूपों (संगीत, कला, नृत्य, नाटक) का इस्तेमाल करते हुए विचारों, कल्पनाओं, भावनाओं को अभिव्यक्त व निरूपित करता है।
- विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों को विद्यार्थियों को सवालों, क्रियाओं, भाव भंगिमाओं, ध्वनि शब्दों के दोहराव जैसी गतिविधियों में शामिल करना चाहिए। इससे उनकी आत्म अभिव्यक्ति और भाषा का विकास बेहतर होता है। उदाहरण के लिए, कहानी में जानवरों की ध्वनि जैसे कौवे की काँव-काँव और बिल्ली की म्याऊँ-म्याऊँ थी। ऐसा करना प्रारम्भिक ध्वन्यात्मक जागरूकता कौशलों से सीधे जुड़ता है और वातावरण में समान ध्वनियों को चिन्हित करता है।

एक शिक्षणविधि के रूप में कहानी सुनाना शिक्षक के लिए वह अवसर उपलब्ध कराता है जहाँ वह एक ही कहानी का अनेक तरीक़ों से प्रयोग कर सकती है, विद्यार्थियों को और कहानियाँ बनाने तथा बेहतर कहानी कहने वाला, बनने के लिए मार्गदर्शन कर सकती है। इससे न सिर्फ़ सीखने के एक महत्त्वपूर्ण उपकरण के उद्देश्य की पूर्ति होती है बल्कि बच्चों की बेहतरी होती है और उन्हें ढेर सारा आनन्द मिलता है।

नोट :

1. *धानी के तीन दोस्त, सुरेश स्वप्निल, रूम टू रीड इंडिया।*
2. *बड़ी क़िताबें (बिग बुक) उन छोटे बच्चों के लिए होती हैं जो पढ़ना सीख रहे हैं। ये बच्चों को मुद्रित सामग्री के साथ जोड़ने में मदद करती हैं ताकि वे अपने आप किताबों की ओर देखने, पन्ने पलटने और उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित हो सकें।*



अनुजा हल्दर अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के साथ एक एसोशिएट (2021-22) के रूप में काम कर चुकी हैं। वे खटीमा, उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड में अँग्रेज़ी और ईसीई के लिए रिसोर्स पर्सन थीं। उन्होंने अँग्रेज़ी में स्नातकोत्तर किया है और जेंडर स्टडीज़ में पीएचडी करने जा रही हैं। नाटक और जेंडर स्टडीज़ में उनकी गहरी रुचि है। उनसे *anujahalder18@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनीष आज़ाद **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय